पाल साम्राज्य: राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, कला-संस्कृति

भाग:-3

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सा॥॥हरसा

ज्ञान-विज्ञान, धर्म-संस्कृति

तिब्बती वृतांत के अनुसार पाल शासक बौद्ध, ज्ञान-विज्ञान और धर्म के महान संरक्षक थे. धर्मपाल ने नालंदा विश्वविद्यालय का पुरुत्थान करवाया और उसके खर्चे के लिए 200 गाँव दिए. उसने मगध में, नालंदा के समान ही प्रसिद्धि वाली विक्रमशिला विश्वविद्यालय का स्थापना करवाया. पालों ने बौद्ध भिक्षुओं के लिए बड़ी संख्या में विहार बनवाएं.

तिब्बत से पाल शासकों के घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंध थे. प्रसिद्द बौद्ध विद्वान शांत रक्षित और दीपंकर को तिब्बत आमंत्रित किया गया.

पाल शासकों ने बौद्ध के आलावा (पाल शासक प्रमुख रूप से बौद्ध धर्म के संरक्षक थे) शैव और वैष्णव मत को संरक्षण दिया. उन्होंने बंगाल में शरणार्थी ब्राह्मणों को बसाया. वे सभी धर्मों को संरक्षण प्रदान करते थे और किसी के धार्मिक विश्वासों के कारण उसका दमन नहीं करते थे.

अर्थव्यवस्था एवं व्यापार

पश्चिम बंगाल में बसाये गए शरणार्थी आबादी के फलस्वरूप वहां कृषि का प्रसार हुआ. पशुपालक और खाद्य संग्राहक समुदाय स्थायी रूप से बसकर खेती करने लगे. बंगाल की बढती समृद्धि के कारण दक्षिण पूर्व एशिया के देशों बर्मा, मलाया, जावा, सुमात्रा आदि एवं चीन के साथ व्यापारिक-सांस्कृतिक संबंध बनाया जा सका.

दक्षिण पूर्व एशिया और चीन के साथ व्यापार बहुत लाभदायक था और इससे पाल साम्राज्य की समृद्धि में बढ़ोतरी हुई.इस व्यापार के फलस्वरूप पाल साम्राज्य में सोना और चांदी का भंडार बढ़ा.

मलाया, जावा, सुमात्रा और पडोसी द्वीपों पर राज्य करने वाले बौद्ध शासक शैलेन्द्र का पाल शासकों से घनिष्ठ संबंध था. उसने नालंदा में एक मठ बनवाया. पालों के काल में फारस की खाड़ी क्षेत्र के साथ भी व्यापार बढ़ा.

निष्कर्ष,

पालों ने 750 से 850 ईस्वी तक, लगभग 100 वर्षों तक पूर्वी भारत में वर्चस्वशाली ढंग से शासन किया और अन्य शासकों से संघर्ष के बाबजूद एक बड़े क्षेत में स्थिर जीवन की परिस्थितियां प्रदान की, कृषि का विस्तार किया, तालाब और नहरों का निर्माण कराया तथा कला एवं साहित्य को संरक्षण प्रदान किया.